

व्यक्ति-विशेषों, स्टार्ट-अप्स और एमएसएमईयों में नवप्रवर्तन को प्रोत्साहन (प्रिज्म)

1. प्रस्तावना
2. अन्य गतिविधियां



सत्यमेव जयते



सत्यमेव जयते

व्यक्ति-विशेषों, स्टार्ट-अप्स, एमएसएमई में नवप्रवर्तनों को प्रोत्साहन (प्रिज्म)

1. प्रस्तावना

वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान विभाग (डीएसआईआर) ने 12वीं पंचवर्षीय योजना के दौरान व्यक्ति-विशेषों, स्टार्ट-अप्स और एमएसएमई में नवप्रवर्तनों को प्रोत्साहन (प्रिज्म) का एक नया कार्यक्रम आरंभ किया है। इस योजना को 14वें वित्त आयोग अवधि की समाप्ति, अर्थात् दिनांक 31.03.2020 तक बढ़ाया गया है। इस कार्यक्रम का उद्देश्य व्यक्ति-विशेष नवप्रवर्तकों, जिनमें अपने मूल विचारों को कार्यशील मॉडलों, प्रोटोटाइप में परिवर्तित करने की क्षमता है, उन्हें समर्थन देना है। इसका उद्देश्य औद्योगिक क्लस्टर इकाइयों में एमएसएमई इकाइयों को सहायता देने के प्रयोजनार्थ नई प्रौद्योगिकी समाधानों के विकास के लिए स्वायत्त संस्थानों अथवा संगठनों अथवा पंजीकृत सोसायटी को समर्थन देना भी है। विभाग ने वर्ष 2017-18 (दिनांक 11 दिसंबर, 2017 तक) के दौरान इक्कीस (21) नई परियोजनाओं को सहयोग प्रदान किया (अनुबंध-9)। विभाग ने वर्ष के दौरान 15 प्रिज्म परियोजनाओं को सफलतापूर्वक पूर्ण किया है। प्रिज्म के अंतर्गत सहायता प्राप्त पूर्ण परियोजनाओं का विवरण अनुबंध-10 में दिया गया है। प्रिज्म के अंतर्गत पूर्ण/चालू परियोजनाओं में से कुछ की मुख्य उपलब्धियां नीचे तत्काल संदर्भ के लिए दी गई हैं।

बायोमास से जैविक-उत्पाद का वाणिज्यिक निष्कर्षण

प्रिज्म योजना के तहत डीएसआईआर के वित्तीय सहायता के साथ एनईआईएसटी, जोरहाट में स्थित टीओसीआईसी (टीईपीपी आउटरीच एवं क्लस्टर नवप्रवर्तन केंद्र) ने जोरहाट (असम) के श्री भगवान बरूआ को चिन्हित कर प्रशिक्षित किया। खाद्य बाइ-कार्बोनेट, जिसे आम तौर पर कोलाखार (Kal Khar) के रूप में जाना जाता है, काफी लोकप्रिय और पारंपरिक खाद्य सामग्री है जिसे देश के पूर्वोत्तर भाग में उपयोग किया जाता है। इस उत्पाद

को असम के सभी परिवारों में अनवरत रूप से उपयोग किया जाता है। इसे पारंपरिक रूप से केले के पेड़ों के चुनिंदा भागों को जलाकर उत्पादित किया जाता है। इसे पानी में मिश्रित कर कपड़ों की सहायता से फिल्टर किया जाता है। पारंपरिक रूप से उत्पादित इस खाद्य बाइ-कार्बोनेट में कुछ अशुद्धताएं होती हैं (मुख्यतः कार्बनिक कण)। शहरी और अर्द्ध शहरी क्षेत्रों में खाद्य बाइ-कार्बोनेट उत्पादित करने हेतु लोगों के पास न तो समय है, और न ही सुविधाएं। अतः, लोग रासायनिक रूप से उत्पादित बाइ-कार्बोनेट का उपयोग करते हैं। वर्तमान उत्पाद केले से वैज्ञानिक तरीके से उत्पादित खाद्य बाइ-कार्बोनेट की आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। परियोजना में, मूल रूप से खाद्य बाइ-कार्बोनेट उत्पादित करने का लक्ष्य रखा गया है, लेकिन उपोत्पाद के रूप में जैविक पोटाश भी उत्पादित की जाती है। जीरो डिस्चार्ज (कम मात्रा में सर्जित फ्ल्यू गैस को छोड़कर) के सिद्धांत के साथ प्रक्रम के दौरान उत्पादित राख को भी एक उत्पाद के रूप परिवर्तित किया जाता है। प्रक्रम के दौरान सृजित सफेद राख में काफी मात्रा में सिलिका होता है जिसे अन्य उत्पाद, अर्थात् भीम ऐश डिटर्जेंट (जो कि बर्तनों और सदृश्य उत्पादों को साफ करने के लिए एक प्रभावकारी डिटर्जेंट है) उत्पादित करने हेतु कुछ जैविक योग्य पदार्थों के साथ मिलाया जाता है। इसके अलावा, अन्य सामान्य खाद्य उत्पाद (जैसे कि अचार) भी उत्पादित किए जाते हैं। प्रक्रम में एक अन्य महत्वपूर्ण अभिकल्पित पहल यह है कि इसमें उत्पादन के दौरान कोई भी बाह्य ईंधन का उपयोग नहीं किया जाता है। केले की डंडियों और अन्य भागों को जलाने जाने की प्रक्रिया के दौरान सृजित ताप को डिस्टिलेशन प्रक्रम में उपयोग किया जाता है। अतः, प्रक्रम काफी ऊर्जा दक्ष बन जाता है। बर्निंग चैम्बर, क्लिन एवं अन्य भागों का बड़े ही सावधानी के साथ अभिकल्पन किया जाता है ताकि प्रक्रम के दौरान ताप की कम से कम हानि हो।



भारतीय स्थितियों के लिए कार्यात्मक रूप से अद्यतित 72 nm³/दिन बाँयो-सीएनजी संयंत्र के लिए उन्नत प्रोटोटाइप का विकास

टीओसीआईसी द्वारा सीएसआईआर-सीएमईआरआई, दुर्गापुर में कोलकाता के डॉ. अमिताव रॉय को चिन्हित और प्रशिक्षित किया गया। इस नवप्रवर्तक ने भारतीय स्थितियों के लिए कार्यात्मक रूप से अद्यतित 72 nm³/दिन बाँयो-सीएनजी संयंत्र के लिए उन्नत प्रोटोटाइप विकसित किया है। इस प्रौद्योगिकी में किसी भी प्रि-कम्प्रेसर का उपयोग नहीं किया जाता है, जैसा कि प्रतिस्पर्धियों की प्रौद्योगिकी में किया जाता है। इस प्रौद्योगिकी की विशेषता को प्रदर्शित करते हुए यह पाया गया कि इससे एक ही समय पर गैस कम्प्रेसन, गैस स्क्रोबिंग तथा गैस ड्राईंग से 50-70 प्रतिशत तक पूंजी लागत को कम किया जा सकता है और दक्षता को 50 प्रतिशत तक बढ़ाया जा सकता है। चूंकि, इसके कम्प्रेसन में कोई यांत्रिक पिस्टन नहीं है, इसलिए कम्प्रेसन चैम्बर के भीतर यांत्रिक

रूप से कोई घर्षण, रगड़ एवं खराबी नहीं आती है।

इस प्रौद्योगिकी का वॉटर कॉलम एक द्रव्य पिस्टन के रूप में कार्य करता, अर्थात पिस्टन रिंग के आस-पास गैस का रिसाव नहीं होता है, जिससे कि कम्प्रेसन की दक्षता कम हो जाए। दूसरी ओर, इससे पिस्टन कम्प्रेसन में 70-80 प्रतिशत वॉल्यूम मैट्रिक दक्षता की तुलना में, वॉल्यूम मैट्रिक दक्षता बढ़कर 97 प्रतिशत हो गई। अपरिष्कृत गैस के बीच इसका रेजिडेंस टाइम 30 गुणा अधिक है और स्क्रबिंग वाटर फूट प्रिंट को 70 प्रतिशत तक तथा स्क्रबिंग टावर की ऊंचाई को 90 प्रतिशत तक कम करता है। इस परियोजना को सफलतापूर्वक पूर्ण कर लिया गया है।



निरंतर आधार पर मैसोफिलिक एरोबिक त्वरित कंपोस्टिंग के जरिए जैविक रूप से घूलनशील अवशिष्टों की बेहतरीन कंपोस्टिंग

प्रिज्म योजना के अंतर्गत डीआईएसआर की वित्तीय सहायता के साथ टीओसीआईसी द्वारा दिल्ली के डॉ. पवन कुमार झा को चिन्हित कर आईआईटी रूड़की में प्रशिक्षित किया गया।

इस परियोजना का उद्देश्य निरंतर आधार पर कार्यरत व्यक्ति विशेषों या परिवार समूह स्तरों पर, दुर्गंध उत्सर्जित किए बिना तथा बाह्य



ऊर्जा आवश्यकता के बिना आसान संचलन एवं कम स्थान की आवश्यकता के साथ जैव घूलनशील अवशिष्टों की कंपोस्टिंग के लिए एक प्रणाली विकसित करना था। परियोजना के तहत विकसित मेसोफिलिक एरोबिक त्वरित कंपोस्टिंग (एमएआरसी) नामक कंपोस्टिंग उपकरण, प्राकृतिक रूप से उत्पन्न जीवाणुओं के त्वरित विकास के लिए कंपोस्टर के भीतर वायु/ऑक्सीजन उपलब्ध कराने के सिद्धांत पर आधारित है, जिसके परिणामस्वरूप जैविक पदार्थों का तेजी से अपघटन होता है। कंपोस्ट में वायु/ऑक्सीजन उपलब्ध कराकर वायुमंडल जैसी स्थिति सृजित करने के लिए कोई भी बाह्य ऊर्जा की आवश्यकता नहीं होती है। एमएआरसी को एफआरपी (फेरो रिइंफोर्समेंट प्लास्टिक) से निर्मित किया गया है। इसकी आकृति अंडाकार है जिसे ज्यादा प्रयास के बिना साधारण रूप से घूमने में सहायता प्रदान करने हेतु बॉल एवं बियरिंग के साथ आयरन स्टैंड पर फिट किया जाता है। कंपोस्टर के कुछ भागों के ऊपर एवं भीतरी दीवारों पर अनेक परफोरेशन्स स्थापित किए गए हैं। कंपोस्टर को आंतरिक रूप से 2 भागों में विभाजित किया जाता है, जिनके अलग-अलग मुंह होते हैं। कंपोस्टर में कंपोस्ट की जाने वाली सामग्रियों को डालने के लिए इन मुँहों की चौड़ाई पर्याप्त होती है। कंपोस्टर को दिन में दो बार साधारण रूप से 5 मिनटों तक घुमाया जा सकता है। जैसे ही कंपोस्टर घूमता है, इसमें बाहर से वायु का प्रवेश होता है जिससे यह वायुमंडलीय बन जाता है। ऐसी स्थिति में हाइड्रोजन सल्फाइड जैसी दुर्गंध वाली गैसे सृजित नहीं होती हैं। यह कंपोस्टर के भीतर वायुमंडलीय जीवाणुओं के विकास को बढ़ाता है जिसके कारण और जैविक अवशिष्टों के अपघटन की दर वृद्धि होती है। दोनों चैम्बरों को 15 दिनों में वैकल्पिक तौर पर उपयोग किया जाता है, अर्थात जब एक चैम्बर में उसकी कुल क्षमता की आधी क्षमता विद्यमान रहती है। जब एक चैम्बर अपनी आधी क्षमता या उससे अधिक भर जाता है, तब इसे बंद कर दिया जाता है और दूसरे चैम्बर में अवशिष्ट डाला जाता है। जब दूसरा

चैम्बर अपनी आधी क्षमता तक भर जाता है। तब तक पहले तीन चैम्बरों के अवशिष्ट लगभग पूर्ण रूप से अपघटित होकर खाद के रूप में परिवर्तित हो जाते हैं। खाद को आसानी से निकालकर परिवारों द्वारा बागवानी/कृषि कार्यों के लिए उपयोग किया जाता है या उसे सुखाकर कृषि कार्यों में आगामी उपयोग करने तक भंडारित किया जाता है। आर्थिक लाभ प्राप्त करने हेतु इसे बेचा भी जा सकता है। परियोजना के तहत इस प्रकार के तीन कंपोस्टों को रूपांकित (फैब्रीकेशन) कर राजघाट, नई दिल्ली के निकट एक श्रमिक कैंप में विभिन्न स्थानों पर स्थापित किया गया, जहाँ 700 से अधिक श्रमिक रहते हैं। सभी कंपोस्टों को नियमित तौर पर परिचालित किया जाता है तथा शीतकाल और ग्रीष्म के ऋतुओं में उनकी निगरानी की जाती है।

उर्वर कुक्कुट अंडों के अंडजनन के लिए बायोमास आधारित पर्यावरण अनुकूल इंक्यूबेटर

प्रिन्म योजना के अंतर्गत डीआईएसआर की वित्तीय सहायता के साथ टीओसीआईसी द्वारा कोलकाता के श्री शंकर भट्टाचार्य को चिह्नित कर सीएसआईआर-सीएमईआरआई, दुर्गापुर में प्रशिक्षित किया गया। इस नवप्रवर्तक ने उर्वर कुक्कुट अंडों के अंडजनन के लिए बायोमास आधारित पर्यावरण अनुकूल इंक्यूबेटर सफलतापूर्वक विकसित किया। यह प्रौद्योगिकी काफी साधारण है और इसे किसी भी प्रकार के बायोमास, जो कि ग्रामीण क्षेत्रों में प्रचुर मात्रा में निःशुल्क उपलब्ध होता है, के साथ चालित किया जा सकता है। यह पारंपरिक विद्युतीय इंक्यूबेटर से हटकर है, इसमें बिजली की आपूर्ति में बाधा आने के कारण आंशिक रूप से अंडजनित अंडों की खराबी होने का कोई खतरा नहीं होता है। इस इंक्यूबेटर को किसी भी ऐसे दूर-दराज के स्थान में चालित किया जा सकता है





जहाँ बिजली की आपूर्ति नहीं है। यह उपकरण ऐसे ग्रामीण क्षेत्रों में भी काफी उपयोगी है, जहाँ अंडों के व्यापक ऊष्मायन के लिए सुविधा उपलब्ध नहीं है। इसके उपयोग से अंडजनन करने वाली प्रत्येक मुर्गी या मादा बत्तख से मात्र 8 अंडे की उत्पादन दर को बढ़ाकर 12 किया जा सकता है। बायोमास आधारित इंक्यूबेटर की पूंजीगत एवं परिचालन लागत 600 अंडों की क्षमता के पारंपरिक विद्युतीय इंक्यूबेटर की तुलना में काफी कम है। परियोजना को सफलतापूर्वक पूर्ण कर लिया गया है।

ग्रामीण और शहरी आबादी के लिए दाँतों की कैविटी एवं मसूड़ा रोग के निवारण, नियंत्रण और उपचार के लिए किफायती निजी ओरल इरिगेटर (3-इन-1 डेंटल जेट) का अभिकल्पन एवं विकास

प्रिज्म योजना के अंतर्गत डीआईएसआर की वित्तीय सहायता के साथ टीओसीआईसी द्वारा दिल्ली के डॉ. सुधांशु कन्सल को चिह्नित कर सीएसआईआर-सीएमईआरआई, दुर्गापुर में प्रशिक्षित किया गया। इस नवप्रवर्तक ने एक ऐसा उपकरण विकसित किया है जिससे उपयोगकर्ता के हाथों या पैरों से दबाव देकर फ्ल्यूड जेट के उपयोग को सार्थक किया है। फ्ल्यूड को साधारण रूप से चालित एक पंप से दबाव दिया जाता है और उसे एक भंडार-संग्रह में भंडारित किया जाता है। तत्पश्चात, दबाव युक्त फ्ल्यूड को छोटी लंबाई की ब्यूब, जिसे एक ऐसी वियोज्य टिप से कनेक्ट किया जाता है जिससे फ्ल्यूड जेट नदारद हो जाता है, के जरिए संचारित किया जाता है। फ्ल्यूड के दबाव को विनियमित किया जा रहा है।

यह दाँतों से खाद्य पदार्थों के कणों और गंदगी को हटाने तथा आम दंत रोगों, विशेष रूप से दंत कैविटी एवं मसूड़ा संक्रमणों को रोकने व हटाने के लिए निजी ओरल हाइजिन के लिए काफी उपयोगी है। चूंकि इसे साधारण रूप से चालित किया जा सकता है और यह ज्यादा मंहगी भी नहीं है, इसलिए यह नवप्रवर्तन ग्रामीण और शहरी आबादी के लिए काफी मददगार होगा। नवप्रवर्तक द्वारा उत्पाद का विकास कार्य पूरा कर लिया गया है।

पादप डीएनए के प्रत्यक्ष-पीसीआर प्रवर्धन के लिए किट का विकास

प्रिज्म योजना के अंतर्गत डीआईएसआर की वित्तीय सहायता के साथ टीओसीआईसी द्वारा दिल्ली के श्री गोविंद कृष्ण व्यास को चिह्नित कर सीटीईई, उदयपुर में प्रशिक्षित किया गया। सामान्य रूप से पादप रोग नैदानिकों पर पादप आनुवंशिक अध्ययन पादप सामग्रियों से डीएनए निष्कर्षण, परिष्करण और पीसीआर प्रवर्धन के माध्यम से किए जाते हैं। इस परियोजना में नवप्रवर्तक ने एक ऐसी किट विकसित की है जो एक ही प्रक्रम में सभी 3 या 4 प्रक्रियाओं को पूरा कर लेगी और यह एक नवप्रवर्तनकारी, आसान, त्वरित एवं आर्थिक रूप से महत्वपूर्ण किट है। इस किट में प्लगर, एक्स ट्रेक्शन रिऐजेंटों आदि के साथ पोर्टेबल पंचर सहित एक मिनीलैब है। इस किट को विकसित किए जाने से मार्कर समर्थित चयन एवं किस्मगत पहचान करने के लिए पादप रोग नैदानिकों, पादप आनुवंशिक परिशुद्धता परीक्षण, बीज कंपनियों और बीज



परीक्षण प्रयोगशालाओं को काफी लाभ मिलेगा। किसान फसल नुकसान रोकने में सफल होंगे। इस परियोजना को सफलतापूर्वक पूरा कर लिया गया है।

पैराट्यूबरकुलोसिस संक्रमण, पशुपालन में एक प्रमुख खतरा, की खोज के लिए नवीनतम दिवा इलिसा किट

प्रिन्म योजना के अंतर्गत डीआईएसआर की वित्तीय सहायता के साथ टीओसीआईसी द्वारा जयपुर (राजस्थान) के डॉ. जगदीप सिंह सोहल को चिन्हित कर सीटीईई, उदयपुर में प्रशिक्षित किया गया। इस नवप्रवर्तक ने परियोजना 'पैराट्यूबरकुलोसिस संक्रमण, पशुपालन में एक प्रमुख खतरा, की खोज के लिए नवीनतम दिवा इलिसा किट का विकास' को सफलतापूर्वक कार्यान्वित किया है। पैरा-ट्यूबरकुलोसिस जुगाली पशुओं (बकरी, भेड़, गोपशु भैंस) का एक क्रोनिक ग्रेनूलोमाटुस एंटेरिटिस है जिससे प्रत्येक वर्ष काफी आर्थिक नुकसान होता है। इस परियोजना के नवप्रवर्तक ने माइक्रो बैक्टीरियम पैराट्यूबरकुलोसिस से सेक्रेटरी एंटीजेंस का प्रयोग करते हुए इलिसा सिद्धांत के आधार पर नैदानिक प्रक्रम विकसित किया है। चूंकि इस किट को निस्सारणीय एंटीजेंस के आधार पर विकसित किया गया है, अतः यह टीकाकृत एवं संक्रमित पशुओं में आसानी से विभेद कर सकती है। एंटीजेंन विशिष्टता और इलिसा सिद्धांत के कारण नैदानिक पद्धति काफी विशिष्ट एवं संवेदनशील है। चूंकि पैराट्यूबरकुलोसिसक के लिए निस्सारणीय एंटीजेन आधारित नैदानिक किट उपलब्ध नहीं है, इसलिए इसकी बाजार में काफी मांग किए जाने की संभावना है। इस परियोजना को सफलतापूर्वक पूर्ण किया गया है।

लागत प्रभावी, तकनीकी रूप से उन्नत द्रव्य क्रोमाटोग्राफी कॉलम

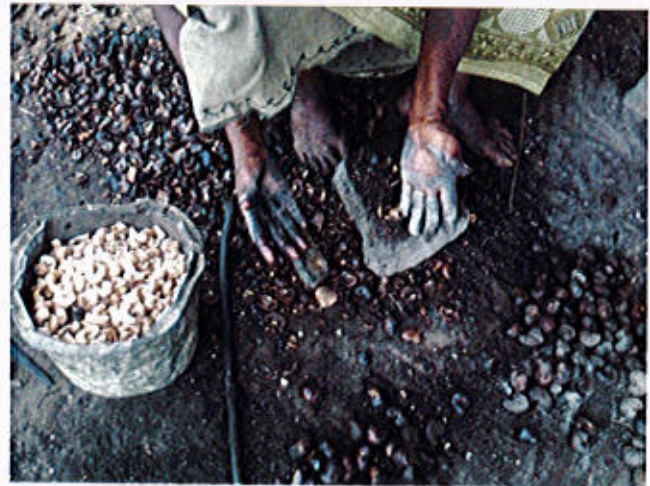
प्रिन्म योजना के अंतर्गत डीआईएसआर की वित्तीय सहायता के साथ टीओसीआईसी द्वारा खड़गपुर के श्री विश्वजीत शाह को चिन्हित कर आईआईटी, खड़गपुर में प्रशिक्षित किया गया। इस नवप्रवर्तक, श्री विश्वजीत शाह, खड़गपुर (पश्चिम बंगाल) द्वारा आईआईटी, खड़गपुर में टीओसीआईसी (टीईपीपी आउटरीच एवं क्लस्टर इन्वोवेशन सेंटर) के माध्यम से एक परियोजना 'लागत प्रभावी, तकनीकी रूप से उन्नत द्रव्य क्रोमाटोग्राफी कॉलम' को कार्यान्वित किया जा रहा है। इस नवप्रवर्तक ने लागत प्रभावी, तकनीकी रूप से उन्नत द्रव्य क्रोमाटोग्राफी कॉलम विकसित किया है। इस विकास में एक फ्लेज हेड का एक उत्कृष्ट अभिकल्पन है जो वियोजन या विनिर्माण प्रक्रम में स्वचलन को समाविष्ट करने हेतु दबाव तथा थ्रोपुट बढ़ाने हेतु उत्पादन में समय को कम करने में सहायता करेगा। वियोजन प्रक्रम में स्वचलन के समावेशन के साथ कॉलम का विकास उत्पादन लागत को कम करने में सक्षम है।



उच्च दबाव अनुप्रयोगों के दौरान इन्लेट/आउटलेट ट्यूब और कॉलम के जोड़ पर रिसाव को कम करने अत्याधुनिक PEEK प्लग के अंत में धागा बांधा गया है। चूंकि इसका विकास आयात से समर्थित है, इसलिए द्रव्य क्रोमाटोग्राफी कॉलम के लिए उत्पादन की समग्र लागत कम हो जाएगी और भारत के लघु श्रेणी उद्योगों के लिए किफायती होगी। इस परियोजना को सफलतापूर्वक पूर्ण कर लिया गया है।

काजू गरी महिला किसानों में कन्टेक्ट डरमेटाइटिस के विरुद्ध एक काउंटर इरिटेंट का विकास - व्यवसायिक स्वास्थ्य जोखिम के लिए एक निवारणीय आर्थिक त्वचा सम्मिश्रण

प्रिन्म योजना के अंतर्गत डीआईएसआर की वित्तीय सहायता के साथ टीओसीआईसी द्वारा कांचीपुरम (तमिलनाडु) के डॉ. के. जयप्रकाश को चिन्हित कर एसपीएमवीवी, तिरुपति में प्रशिक्षित किया गया। परियोजना - "काजू गरी महिला किसानों में कन्टेक्ट डरमेटाइटिस (त्वचा सूजन) के विरुद्ध एक काउंटर इरिटेंट





का विकास-व्यवसायिक स्वास्थ्य जोखिम के लिए निवारणीय आर्थिक त्वएचा सम्मिश्रण" को नवप्रवर्तक, डॉ. के जयप्रकाश, कांचीपुरम द्वारा कार्यानिवत किया जा रहा है। इस नवप्रवर्तक ने काजू गरी महिला किसानों में काजू गरी इरिटेंट (एनाकार्डिक अम्ल) कन्टेक्ट डरमेटाइटिस के विरुद्ध त्वचा के परिरक्षण के लिए एक बेरियर क्रीम (काउंटर इरिटेंट) विकसित की है। इसमें प्राकृतिक पदार्थों (मधुमक्खी वैक्सम, अरंडी तेल, तरल पैराफिन, कैल्शियम हाइड्रॉक्साइड, ग्लिसरीन एवं वेसलीन) के साथ तैयार किया गया। इस नवप्रवर्तन से व्यावसायिक स्वास्थ्य को संरक्षित किया जाता है और विशाल एवं आर्थिक रूप से पिछड़े काजू गरी किसानों के स्वास्थ्य में वृद्धि होती है। इस परियोजना को सफलतापूर्वक पूर्ण किया गया।

2. अन्य गतिविधियां

2.1 आम लोगों तक प्रिज्म की पहुंच बढ़ाने हेतु डीएसआईआर द्वारा वर्ष के दौरान निम्नलिखित स्थान पर एक नए टीईपीपी आउटरीच

एवं कलस्टर इनोवेशन सेंटर (टीओसीआईसी) की स्थापना की है:

(i) गुजरात राज्य जैव-प्रौद्योगिकी मिशन (जीएसबीटीएम), गुजरात सरकार, गांधीनगर (गुजरात)।

2.2 प्रिज्म पर शैक्षणिक संस्थाओं का सुग्राहीकरण करने और नेटवर्क साझेदारों से जुड़े असंख्य लोगों तक प्रिज्म पर सूचना का प्रसार करने हेतु वर्ष के दौरान प्रिज्म के अंतर्गत अनेक गतिविधियां आयोजित/सहभागिता की गई:

- बीआईसी, विशाखापत्तनम में दिनांक 9-11 सितंबर, 2017 के दौरान भारत अंतर्राष्ट्रीय नवप्रवर्तन महोत्सव 2017 में प्रिज्म नवप्रवर्तकों की सहभागिता।
- 12वीं पंचवर्षीय योजना के दौरान प्रिज्म योजना के निष्पादन का मूल्यांकन करने हेतु रिपोर्टाधीन अवधि के दौरान दो समीक्षा बैठकों का आयोजन किया गया।